मक़सद

डा0 वसीम सिद्दीक़ी
10/8th Road North
Ahmadi - 61008
Kuwait

टाईम पीस का अलार्म चीखने लगा वोह जल्दी से बिस्तर से उठा और खिड़की का पर्दा उठाकर बाहर झांकने लगा। वोह लड़की रोज़ पौने आठ बजे के आस पास उसकी खिड़की के नीचे गली से गुज़रती थी। उसको तो उस का पता भी नहीं था खिड़की पर तो हमेश पर्दा ही पड़ा रहता था और परदा हटा कर खिड़की से झांकने की कोशिश की कभी उसने ज़रूर महसूस नहीं की क्योंकि वोह खिड़की एक पतली सी गली में खुलती थी जिस में राहगीर तो कम गुज़रते बल्कि वहीं आस पास के रहने वाले या फिर फेरी वाले गुज़रते थे। जब उसने तीन महीने पहले वोह कमरा किराये पर लिया था तो उसने इस खिड़की का पर्दा उठा कर बाहर का जायज़ा ज़रूर लिया था। लेकिन उसके बाद फिर उस खिड़की के परदे को अच्छी तरह से बराबर कर दिया था। बाहर गली का माहौल उसे बिल्कुल नहीं पंसद आया था।

उसने दोबारा खिड़की पर नज़र डाली। पौने आठ बज रहे थे वोह अब आती ही होगी उसने सोचा और थोड़ी देर में वोह उसे गली के एक सिरे पर से आती नज़र ही आ गई और मिन्टो में गली के दूसरी तरफ़ से निकल गई और आज वह उसे अच्छी तरह से देख भी नहीं सका। लगता है उसे देर हो गई थी वोह बहुत तेज़ी से जा रही थी। वोह अब खिड़की के पास से हट गया था और दोबारा बिस्तर पर दराज़ हो गया। हुआ ये कि कुछ दिनों पहले उसके दफ़्तर में आडिट होने वाला था उसने सोचा उस रोज़ ज़रा जल्दी दफ़्तर चला जायेगा और अपनी फाइलें वगैरा दुरूस्त करेगा। उस रोज़ वोह जल्दी उठ गया था और बे ख़्याली में खिड़की का पर्दा उठा कर बाहर झांकने लगा। और फिर झांकता ही रह गया एक लड़की एक छोटा सा प्लास्टिक बैग लिये हुये उधर से जा रही थी। वोह लड़की उसे काफी अच्छी लगी। उसकी नज़र घड़ी पर गई पौने आठ हो रहे थे उसके माने वोह लड़की रोज़ इधर से गुज़रती होगी। उसके बाद उस का रोज़ का मामूल हो गया वोह रोज़ 7:30 बजे का अलार्म लगा कर उठ जाता और जब तक वोह लड़की इधर से गुज़र न जाये वोह खिड़की के नीचे देखा करता। उसके बाद थोड़ी देर बिस्तर में लोट लगाने के बाद दफ़्तर जाने के लिये निकल पड़ता था। वो इनकम टैक्स के दफ़्तर में क्लर्क था और तनख़्वाह के अलावा भी काफी पैसे कमा लेता था। उसका दफ़्तर उस के कमरे से ज़्यादा दूर नहीं था और दफ़्तर के पास ही एक होटल में वोह खाना नाश्ता वगैरा कर लिया करता था।

उस ने उस लड़की के बारे में काफ़ी मालूमात इकठठा कर ली थीं। वोह इस मोहल्ले में रहती थी। उसके वालिद रेलवे के रिटायर्ड गार्ड थे। उसके बहुत सारे भाई बहन थे। घर में तंगी का माहौल था इसी वजह से उस लड़की ने पास ही के एक सिलाई कढ़ाई के स्कूल में नौकरी कर ली थी और जहाँ जाने के लिये उसे गली के नीचे से गुज़रना पड़ता था। उसने सोचा अब ताक झांक से काम नहीं चलेगा। फिर एक दिन उसने एक रूक्का नीचे गिरा दिया। रूक्का गोली की शक्ल में ठीक

उसके सामने गिरा था लड़की एक दम ठिठक गई थी फिर उसने रूक़्क़ा पर एक ठोकर मारी और चलती चली गई। रूक़्क़ा सीधा नाली में गया था उसने सोचा चलो अच्छा हुआ सीधा नाली में गया अगर वहीं पड़ा रह जाता तो किसी के हाथ लग जाता। उसने हिम्मत नहीं हारी वोह दूसरे दिन फिर रूक्का लिख रहा था। अब की वोह गोली की तरह नहीं बल्कि ऊपर से कटी पतंग की तरह लहराता हुआ नीचे गिरा। लड़की हल्की सी ठिठकी थी उसने रूक्के की तरफ एक उचटटी हुई निगाह डाली थी और फिर आगे बढ़ गई। वोह नीचे जाकर काग़ज उठा लाया। रोज़ की तरह वोह 7:30 बजे के अलार्म से उठा। अलार्म की आवाज़ उसे अब बहुत अच्छी लगी थी उसे लगता था कि ये अलार्म की आवाज न हो बल्कि उस लड़की की आवाज़ है जो उसे बुला रही है उसने हौले हौले घड़ी को सहला कर अलार्म बन्द कर दिया और खिड़की के पास आकर बैठ गया। अब की रूक्का ने जहाज़ की शक्ल में उस लड़की के दोपट्टे पर लैन्ड किया और शायद उस में फंस कर रह गया लड़की उस जहाज के साथ चली गई थी उसने वोह मारा का नारा लगाया और टाईम पीस को चूम लिया। उस जहाज़ में अच्छा ख़ासा इज़हारे इश्क था।

आज उसने खिड़की का पर्दा काफी हटा दिया था। हस्ब मामूल लड़की गली के एक कोने से आई लेकिन आज वोह खिड़की के नीचे कुछ लमहों के लिये रूकी और ऊपर खिड़की की तरफ़ देखा था। उसे जब लड़की को अपनी तरफ़ देखते हुये पाया तो बड़े स्टाइल से लखनवी आदाब मारने की कोशिश की जो कि उसने फिल्मों में देखा था वरना वोह लखनऊ तो कभी गया नही था। लड़की भी आदाब कुबूल करके दोहरी हो गई थी और तेज़ी से वहाँ से भागने के अंदाज़ में चल दी। अब तो वोह दो दो फिट खुशी से उछला। वोह याद करने लगा कि परचे में उसने क्या लिखा था।

कुछ जुम्ले उसे याद आने लगे। आप ही मेरी मन्ज़िल हैं, आप को दिलो जान से चाहने लगा हूँ। शायद आप की ही जुस्तुजू थी जो अब तक मैं ने शादी नहीं की। मेरा पैग़ाम कुबूल कीजिये। दोपहर में लंच के वक़्त आप के स्कूल आप से मिलने आऊंगा। बराये महेरबानी मिलने से इनकार नहीं कीजियेगा।

ठीक एक बजे वोह सिलाई कढ़ाई स्कूल की तरफ़ रवाना हो गया। वोह लड़की उसे स्कूल के टूटे बोसीदा लड़की के फाटक के पास खड़ी हुई मिली थी। उसने फिर लखनऊ। आदाब मारा और लड़की के क़रीब खड़ा हो गया। आइये अन्दर स्कूल में चलें लड़की की आवाज़ लड़खड़ा रही थी वोह काफी नरवस नज़र आने लगी थी। अन्दर तो स्टूडेन्ड होंगे। उसने पूछा। नहीं सब जा चुके हैं छुट्टी हो गई है। वोह उसे लेकर स्कूल के एक कमरे में आ गई । लड़की अब तक बहुत नरवस नज़र आ रही थी फिर बोली। ये बताइये ख़त में आप ने जो कुछ लिखा था वोह सच है आप इनकम टैक्स डिपार्टमेन्ट में कोई अफसर हैं। मुझसे शादी करना चाहते है। जी हाँ बिल्कुल सच है और कल ही मेरे वालिद साहब आपके घर जायेंगे मेरा रिश्ता लेकर। सच लड़की बेहद खुश लग रही थी वोह सोचने लगी कि उसकी शादी से उस के अब्बा का बोझ उतर जायेगा। वोह उसकी शादी के

लिये कितना फिक्रमन्द रहते थे। और उनकी सेहत भी खराब हो गई थी। अब उनकी फिक्र दूर हो जायेगी। तो वोह सेहतमंद भी हो जायेंगे। कहाँ खो गईं वोह उस से पूछ रहा था। और फिर उसने कमरा का दरवाज़ा अन्दर से बन्द कर दिया। अरे तुम बिला वजे घबरा रही हो अब तो हम तुमसे शादी करने वाले हैं। लड़की नहीं प्लीज़ नहीं के अलावा कुछ नहीं कह सकी। अब वोह एक गुनाहगार की तरह अपने घर की तरफ़ जा रही थी। बेहद शर्मिंदा। उसने सोचा वोह उस को क्यों नही रोक सकी। उसके नाराज़ होने का ड़र था। नाराज़ हो गया तो शादी नहीं करेगा।

-------0--------0--------

वोह बे मक़सद बाज़ारों में घूमता रहा। फिर अपने कमरे में आकर बिस्तर पर दराज़ हो गया। सुबह 7:30 बजे टाईम पीस का अलार्म फिर चीख़ रहा था। उसे आज अलार्म की आवाज़ बड़ी करीह लगी वोह झटके से उठा और तेज़ी से अलार्म पर हाथ मार कर दोबारा बिस्तर पर लेट गया था। अलार्म एक झटके से खामोश हो गया था। घड़ी लुढ़क कर नीचे गिर गई थी और उस का शीशा टूट कर हर तरफ़ फैल गया था।

★★★